8209837844

www.ugc-net.com

UGC NTA NET (हिन्दी साहित्य)

साहित्यशास्त्र (रसनिष्पत्ति)

ईकाई-3 भाग-10

By Jyoti
(Hindi Educator)

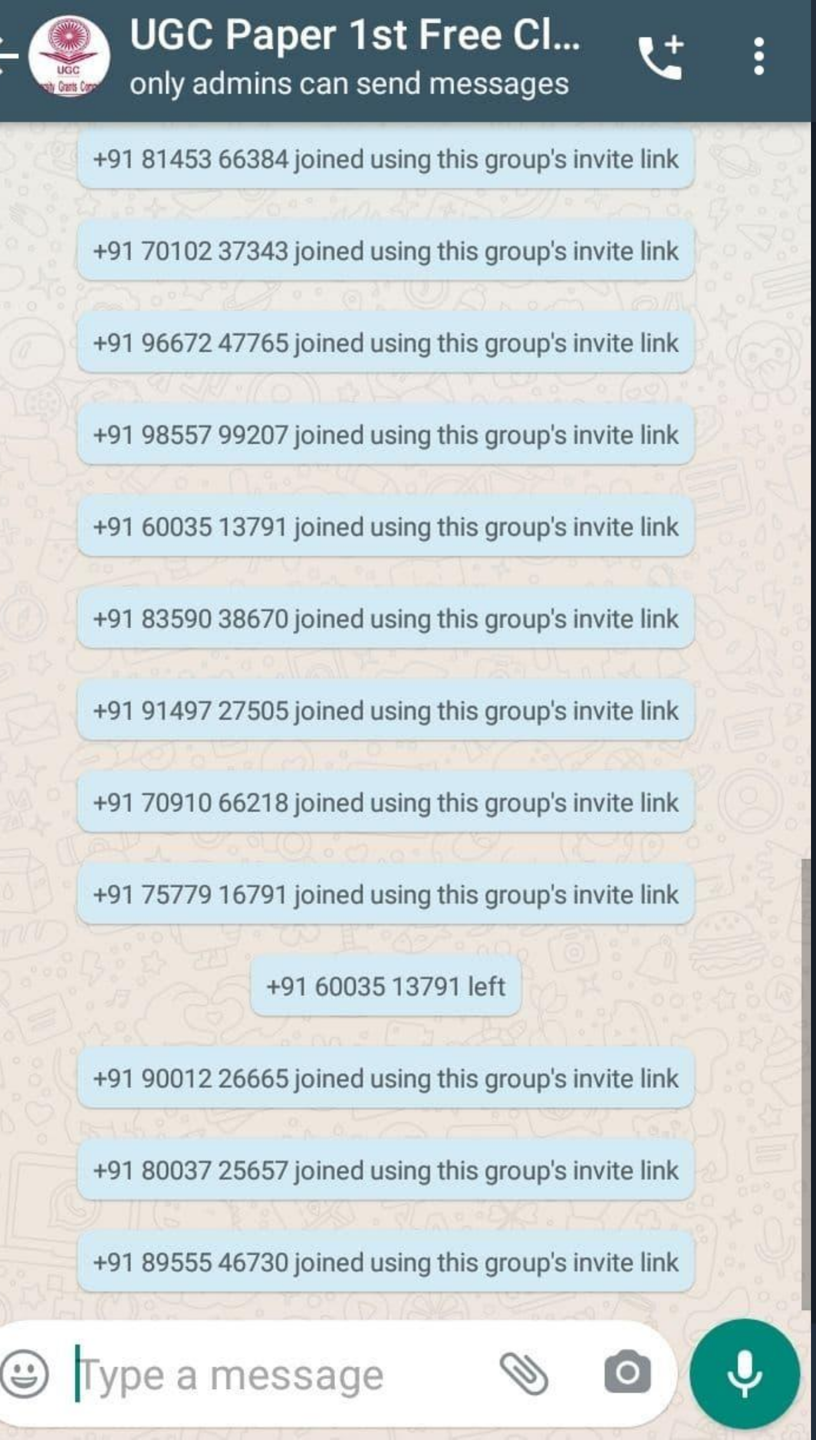
UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages
+91 81453 66384 joined using this group's invite link
+91 70102 37343 joined using this group's invite link
+91 96672 47765 joined using this group's invite link
+91 98557 99207 joined using this group's invite link
+91 60035 13791 joined using this group's invite link
+91 83590 38670 joined using this group's invite link
+91 91497 27505 joined using this group's invite link
+91 70910 66218 joined using this group's invite link
+91 75779 16791 joined using this group's invite link
+91 60035 13791 left
+91 90012 26665 joined using this group's invite link
+91 80037 25657 joined using this group's invite link
+91 89555 46730 joined using this group's invite link
Type a message

UGC Paper 1st Free Cl...
120 subscribers
December 28
Channel created
Channel photo changed
UGC
Broadcast

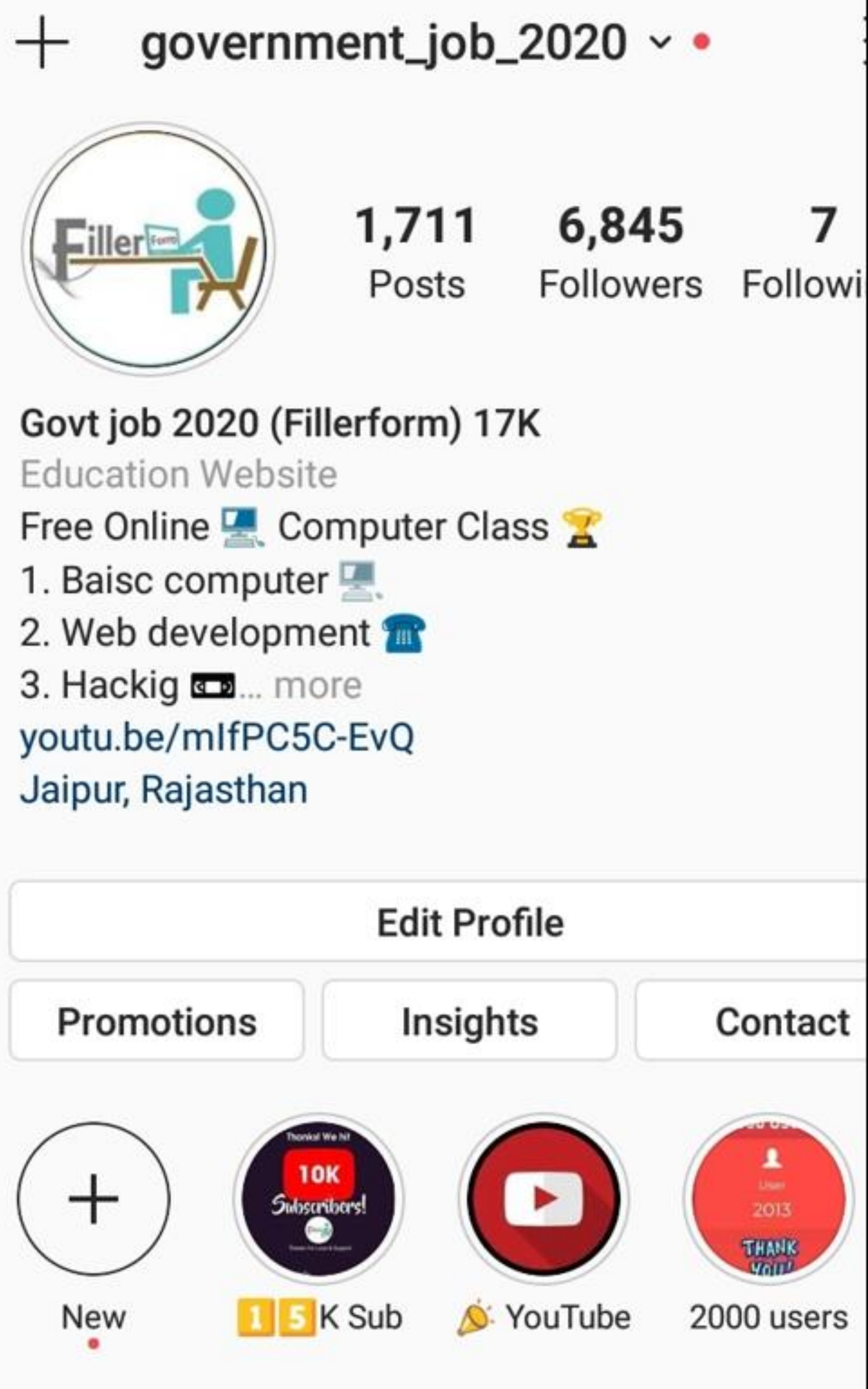
government_job_2020
1,711
Posts
6,845
Followers
7
Govt job 2020 (Fillerform) 17K
Education Website
Free Online Computer Class
1. Baisc computer
2. Web development
3. Hackig ... more
youtu.be/mIfPC5C-EvQ
Jaipur, Rajasthan
Edit Profile
Promotions
Insights
Contact
New
15K Sub
YouTube
2000 users

UGC-NET 2022

Online Live Class
09:00 AM
Current GK

Online Live Class
11:00 AM
1st Paper

Online Live Class
02:00 PM
1st Paper

Online Live Class
12:00 PM
Hindi-2nd paper

Online Live Class
01:00 PM
History-2nd paper

Online Live Class
03:00 PM
Commerce – 2nd

Online Live Class
09:00 PM
Management

January
10

fillerform 8209837844 www.ugc-net.com

UGC-NET 2022

Online Live Class — 12:00 PM — Hindi-2nd paper

Online Live Class — 01:00 PM — History-2nd paper

Online Live Class — 03:00 PM — Commerce – 2nd

Online Live Class — 04:00 PM — Political sciences

Online Live Class — 06:00 PM — Sanskrti

Online Live Class — 08:00 PM — Computer Sce.

Online Live Class — 09:00 PM — Management

JANUARY 17

fillerform 8209837844 www.ugc-net.com

Filler Form
LATEST UPLOADS
UGC NET Paper 1st
Teaching Aptitude
"Level of Teaching"
11:00 AM Level Of Teaching | Teaching
11:00 AM Level Of Teaching | Teaching Aptitude By Jitendra Goswami | NET
LEARNING MATERIAL
Quizzes
Notes
Sample Papers
UGC NET 100%
Off Free Class
Free Notes
Live Class
5000+MCQ+PYQ
Free Books
100% OFF
fillerform

8209837844
www.ugc-net.com

हिन्दी सिलेबस

इकाई – III

साहित्यशास्त्र

काव्य के लक्षण, काव्य हेतु और काव्य प्रयोजन।
प्रमुख संप्रदाय और सिद्धान्त – रस, अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति और औचित्य।
रस निष्पत्ति, साधारणीकरण।
शब्दशक्ति, काव्यगुण, काव्य दोष
प्लेटो के काव्य सिद्धान्त।
अरस्तू : अनुकरण सिद्धान्त, त्रासदी विवेचन, विरेचन सिद्धान्त।
वड्र्सवर्थ का काव्यभाषा सिद्धान्त।
कॉलरिज : कल्पना और फैंटेसी।
टी.एस.इलिएट : निर्वैयक्तिकता का सिद्धान्त, परम्परा की अवधारणा।
आई.ए.रिचड्र्स : मूल्य सिद्धान्त, संप्रेषण सिद्धान्त तथा काव्य-भाषा सिद्धान्त। रूसी रुपवाद।
नयी समीक्षा। मिथक, फन्तासी, कल्पना, प्रतीक, बिम्ब।

रस निष्पत्ति

8209837844

www.ugc-net.com

रसनिष्पत्ति

काव्य से रस किस प्रकार उत्पन्न होता है, यह काव्यशास्त्र का शाश्वत प्रश्न रहा है। संस्कृत काव्यशास्त्र के आद्याचार्य भरत मुनि ने अपने विख्यात रससूत्र में रस निष्पत्ति पर विचार करते हुए लिखा-

विभावानुभाव-व्यभिचारी-संयोगाद् रसनिष्पत्तिः।

—**भरत मुनि, नाट्यशास्त्र** अर्थात् विभाव, अनुभाव और संचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है। विभाव अनुभाव और संचारी भाव तो स्पष्ट था किंतु संयोग और निष्पत्ति के अर्थ को लेकर परवर्ती आचार्यों ने अनेक मत प्रकट किए।

8209837844
www.ugc-net.com

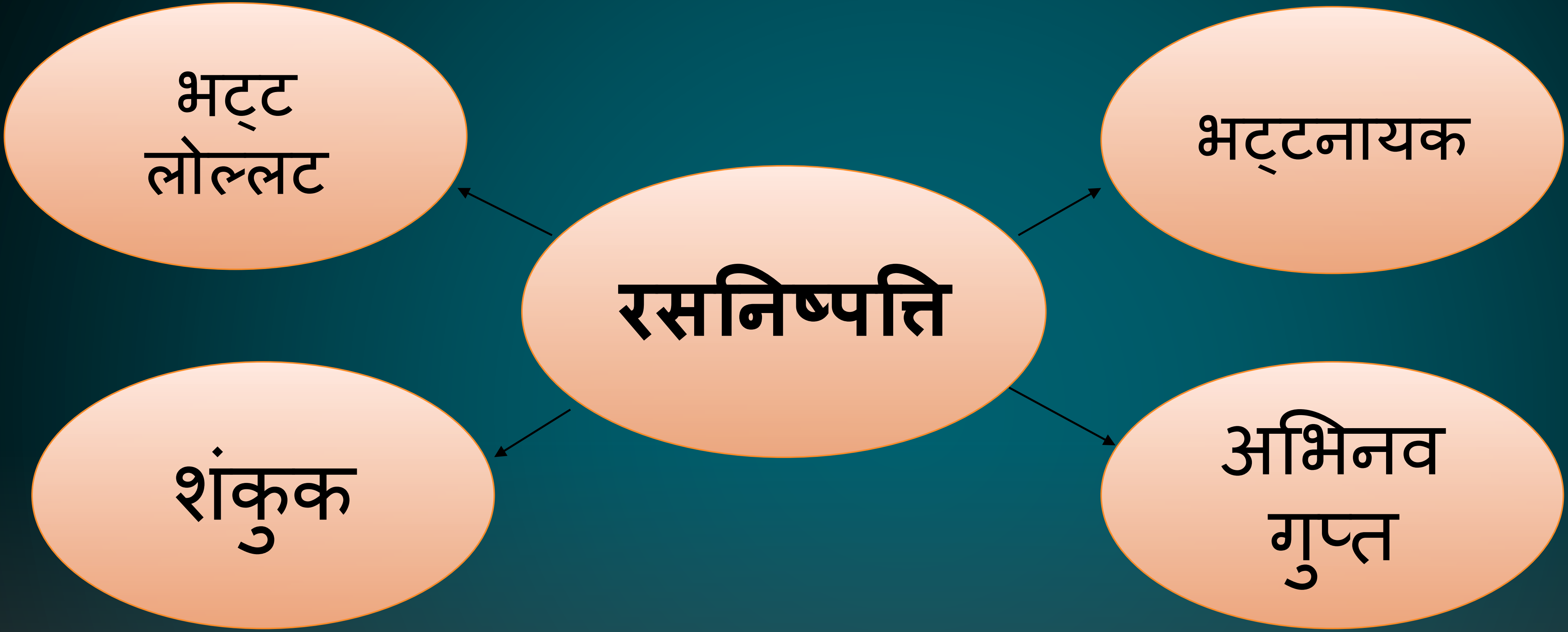

1.भट्टलोल्लट : उत्पत्तिवाद (आरोपवाद)

भट्ट लोल्लट ने निष्पत्ति का अर्थ उत्पत्तिवाद से लिया है तथा संयोग शब्द के तीन अर्थ निकाले हैं। स्थायी भाव के साथ उत्पाद्य- उत्पादक भाव संबंध, अनुभाव के साथ गम्य-गमक भाव संबंध, तथा संचारी भावों के साथ पोष्य-पोषक संबंध।

संपादित करेंइनके अनुसार अपरिपक्व स्थायी भाव विभावादि का संयोग पाकर जब परिपक्व होता है तभी इसका नाम रस पड़ जाता है। यह रस मुख्य रूप से अनुकार्य (वास्तविक रामादि) में रहता है और गौण रूप से नट में। यधपि भट्ट लोल्लट ने उक्त मन्तव्य में सहदय का उल्लेख नहीं किया, तथापि उन्हें मान्य यह होगा कि सहदय नट-नटी के माध्यम से उसी रस को प्राप्त करता है जिसे वास्तविक रामादि ने प्राप्त किया होगा। इस सिध्दांत को 'आरोपवाद' अथवा 'उत्पत्तिवाद' कहा जाता है।आझेप शंकुक ने कहा कि भट्ट लोल्लट का यह सिध्दांत कि 'सामाजिक नायक-नायिका द्वारा अनुभूत रस का आस्वादन नट-नटी के माध्यम से प्राप्त करता है। "अतिव्याप्ति दोष से युक्त है जिसमें स्थायीभाव होगा, रस भी उसी में होगा, न किसी अन्य में इस तरह केवल नायक-नायिका ही रसास्वादन प्राप्ति के अधिकारी ठहरते हैं ना कि नट-नटी।

2.शंकुक : अनुमितिवाद (अनुमानवाद)

शंकुक ने निष्पत्ति का अर्थ अनुमिति से लिया है तथा संयोग का अर्थ लिया है अनुमाप्य-अनुमापक भाव संबंध।शंकुक रस-प्रक्रिया के लिए एक नए तथ्य को प्रस्तुत करते हैं कि रस की स्थिति अनुकार्य (मूल-पात्र) में होती है, नट अपने कुशल अभिनय द्वारा हाव-भाव के माध्यम से उसे प्रदर्शित करना चाहता है। वस्तुत: नट में रस की स्थिति नहीं है पर उसमें यह अनुमान कर लिया जाता है। जब तक सामाजिक नट को उसके अभिनय-कौशल के बल पर रामादि नहीं समझता तब तक उसे रसास्वाद प्राप्त नहीं हो सकता। नट के अभिनय कौशल को देखकर ही सहदय भ्रम के कारण नायक का अनुमान करता है। वस्तुत: शंकुक का सिध्दांत भट्ट लोल्लट के सिध्दांत की मूल भित्ति है। दोनों में थोड़ा सा अंतर यही है कि भट्टलोल्लट के अनुसार सामाजिक नट पर मूल नायकादि का 'आरोप' कर लेता है जबकि शंकुक वह 'अनुमान' कर लेता है कि नट ही मूल नायक हैं। शंकुक का 'अनुमान' अन्य लौकिक अनुमानों से भिन्न और विलक्षण है। जिस प्रकार चित्रतुरंग में भागता हुआ घोड़ा न भागते हुए भी भागता सा प्रतीत होता है।

अनुमान की सहायता से प्राप्त ज्ञान अनुमिति है इसके तीन भेद है

- पूर्ववत् अनुमान (विभाव)
- शेषवत् अनुमान (अनुभाव)
- सामान्योद्द अनुमान (संचारी भाव)

3.भट्टनायक (भुक्तिवाद)

भट्ट नायक ने निष्पत्ति से भुक्ति का अर्थ ग्रहण किया है तथा संयोग का भाव के लिए भोज्य-भोजक संबंध माना है।भट्टनायक ने शंकुक के सिध्दांत की सीमाओं और दोषों को पहचान कर रस-निष्पति की नई व्याख्या दी। उनकी धारणा है कि न तो रस की उत्पति होती है और न अनुमिति ही तथा उसकी अभिव्यक्ति भी नहीं होती बल्कि अनुभव और स्मृति के आधार पर रस की प्रतिति होती है। उन्होने शब्द के तीन व्यापार माने हैं-
१) अभिधा २) भावकत्व ३) भोग (भोजतत्व)। अभिधा व्यापार द्वारा काव्यार्थ का बोध होते ही साधारणीकारणात्मक भावकत्व व्यापार द्वारा स्थायी भाव और विभाव आदि का समग्र क्रियाकलाप देश, काल, व्यक्ति से सम्बन्ध न रहकर साधारण रूप धारण कर लेता है। परिणामत: उक्त दोनों आपत्तियों का निराकरण हो जाता है। साधारणीकरण होते ही भोग अथवा भोजतत्व व्यापार द्वारा सामाजिक का सत्वगुण उसके रजोगुण और तमोगुणों का तिरोभाव करके उद्रिक्त हो जाता है। इसी व्यापार द्वारा सामाजिक रस का भोग अथवा रसास्वादन प्राप्त करता है।

8209837844 www.ugc-net.com

भटनायक के अनुसर रस निष्पत्ति की तीन प्रक्रियाए

- अभिधा की प्रक्रिया
- भावकत्व की प्रक्रिया
- भोजकत्व की प्रक्रिया

"साधारणीकरण के द्वारा रसानुभूति "

4.अभिनवगुप्त (अभिव्यक्तिवाद)

अभिनवगुप्त ने निष्पत्ति का अर्थ अभिव्यक्तिवाद से लेकर संयोग का अर्थ व्यंग्य-व्यंजक भाव संबंध के रूप में लिया है।भरत सूत्र के चौथे व्याख्याता अभिनवगुप्त हैं। अभिनव गुप्त ने अपनी मान्यता स्थायीभाव की स्थिति पर केन्द्रित रख कर प्रस्तुत की। उनका कथन हैं कि राग-द्वेष की भावना को मनुष्य जन्म से ही लेकर पैदा होते हैं। समय-समय पर हम परिस्थिति के अनुकूल भावों का अनुभव करते हैं- ये सभी संस्कार रूप में मनुष्य के हृदय में सोते रहते हैं। इनसे रहित कोई प्राणी नहीं होता, हां इनकी प्रबलता में अंतर हो सकता है, यथा कवि में इनकी अनुभूति अन्य की अपेक्षा अधिक होती है। इन्होंने व्यंजना शक्ति के आधार पर रस सूत्र की व्याख्या करते हुए कहा कि 'विभावादि' और स्थायीभावों में परस्पर व्यंजक-व्यंग्य रूप संयोग द्वारा रस की अभिव्यक्ति होती हैं, अर्थात् विभावादि व्यंजकों के द्वारा स्थायीभाव ही साधारणीकृत रूप में व्यंग्य होकर श्रृंगार आदि रसों में अभिव्यक्त होते हैं, और यही कारण है कि जब तक विभावादि की अवस्थिति बनी रहती है रसाभिव्यक्ति भी तब तक होती रहती है, इसके उपरान्त नहीं।

8209837844

सवश्रेष्ठ सिध्दांत

1. भट्ट लोल्लट
2. शंकुक
3. भट्टनायक
4. अभिनवगुप्त

8209837844
www.ugc-net.com

आचार्य	दर्शन	सिध्दांत	निष्पत्ति का अर्थ	संयोग का अर्थ
भट्ट लोल्लट	मीमांसा	उत्पत्तिवाद	उत्पत्ति	उत्पाद्य-उत्पादक भाव संबंध
शंकुक	न्याय	अनुमितिवाद	अनुमिति	अनुमाप्य-अनुमापक भाव संबंध
भट्टनायक	सांख्या	भुक्तिवाद	भुक्ति	भोज्य-भोजक संबंध
अभिनवगुप्त	वेदांत	अभिव्यक्तिवाद	अभिव्यक्ति	व्यंग्य-व्यंजक भाव संबंध

निष्कर्ष ;- अभिनवगुप्त रस निष्पति से आशय 'रसाभिव्यक्त' लेते हैं, यह सिध्दांत अधिक वैज्ञानिक होने के कारण पर्याप्त लोकप्रिय हुआ।

प्रश्न :- 'साधारणीकरण' का संबंध किस समीक्षा – सिध्दांत से है?

1. मार्क्सवादी
2. मनोविश्लेषणवाद
3. रस सम्प्रदाय
4. कोई भी नहीं

धन्यवाद....

For More Information

8209837844

www.ugc-net.com

/Fillerform /Fillerform /Fillerform

info@fillerform.com